

विश्व हिंदी सचिवालय का सफरनामा

—राकेश शर्मा*

अमेरिका में हिंदी की स्थापना लाला हरदयाल, करतार सिंह सराया एवं सोहन सिंह मकाना ने 1913-15 के मध्य गदर पार्टी की स्थापना के साथ की। युवा अमर शहीद करतार सिंह सराया ने लिखा—'मैं हिंदी, ठेठ हिंदी, खून हिंदी, जात हिंदी हूँ, यही मजहब, यही फिरका, यही है खानदान मंरा।' इन स्वाभिमानी देशभक्तों की राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के प्रति अगाध श्रद्धा को विश्व में हिंदी की स्थापना की दिशा में प्रवासी भारतीयों के प्रथम प्रयास के रूप में देखा जा सकता है, कभी दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्र की ठेठ देहाती भाषा रही हिंदी आज देशकाल की सीमाओं को तोड़ कर विश्व मंचों पर अपना परचम लहरा रही है। इस क्रम में मारीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना शायद हिंदी के विश्वभाषा बनने के सफरनामों में मौल का पत्थर साबित होने जा रहा है, परन्तु इस सचिवालय के स्थापना का भी अपना एक इतिहास रहा जिस पर हम इस लेख के माध्यम से प्रकाश डालेंगे।

सन् 1975 हिंदी जगत का ऐतिहासिक वर्ष था। इसी वर्ष में भारत के शहर नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। मार्क की बात यह थी कि प्रवासी भारतीय, मारीशस के प्रधानमंत्री डा.शिवसागर राम गुलाम को उस सम्मेलन का अध्यक्ष पद संभालने के लिए निर्मात्रित किया गया था। इससे साबित होता है कि उनके प्रति भारतीयों की कितनी भावभीनी आत्मीयता थी। डा. शिवसागर रामगुलाम के वचन के समय देश में हिंदी पढ़ाने का प्रावधान नहीं था। डाक्टरों विधा के अध्ययन में वे 14 वर्ष तक विलायत में रहे। फिर भी वे धाराप्रवाह हिंदी

बोलते थे। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी में ही अध्यक्षीय भाषण देकर उन्होंने लाखों हिंदी प्रेमियों का दिल जीत लिया था। अपने भाषण में उन्होंने एक ऐसे अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र की स्थापना का विचार रखा जहां से भारत के बाहर के देशों में भी हिंदी का प्रचार हो। डॉ. रामगुलाम ने यह भी स्वीकृति दी कि अगले वर्ष यानी कि 1976 में मारीशस में हिंदी का दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जाए।

सन् 1976 में हिंदी के इतिहास का द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन मारीशस में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में एक अन्तरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र की मारीशस में स्थापना को प्रस्ताव रूप में स्वीकार किया गया। 1976 के पश्चात् आगे चलकर 1983 में नई दिल्ली में 1993 में पुनः मारीशस में तथा 1996 में त्रिनिडाड में इस प्रस्ताव को समर्थन प्राप्त होता रहा।

15 दिसंबर 1985 को डॉ. शिवसागर रामगुलाम का देहावसान हो गया। उनके सुपुत्र डॉ. नवीनचन्द्र राम गुलाम देश के प्रधानमंत्री बने। उन्होंने अपने पिता सर शिवसागर के महान सपने को साकार करने को और कदम उठाया। उन्होंने भारत सरकार की सलाह से स्थानीय शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में मारीशस में एक 'विश्व हिंदी सचिवालय' का दफ्तर खुलवाया। सचिवालय की स्थापना के लिए सलाहकार के रूप में श्रीमती सरिता बुद्ध को नियुक्त किया गया। बाद में श्री अजामिल माताबदल जो सचिवालय के संयोजक नियुक्त हुए। फिर सचिवालय के लिए एक अलग दफ्तर और अतिरिक्त कर्मचारी नियुक्त किए गए। सचिवालय के दफ्तर में एक पुस्तकालय की

*हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, दोना पावला, गोवा-403004।

व्यवस्था की गई और एक विश्व हिंदी पत्रिका के प्रकाशन पर कार्य आरम्भ हुआ। मंचोत्सव के प्रयास से एक कथि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ जिसमें भाग लेने के लिए दिल्ली में डॉ. कंदार नाथ सिंह तथा डॉ. राजेन्द्र गौतम को आमंत्रित किया गया। इस प्रकार काम आगे बढ़ता रहा और अंततः विश्व हिंदी सचिवालय की नींव डालने का समय आ गया।

मारोशस में महात्मा गांधी का पदार्पण 30 अक्टूबर 1901 को हुआ था। गांधी आगमन के शताब्दी समारोह (1 नवंबर 2001) में भाग लेने तथा इसी अवसर पर मारोशस में विश्व हिंदी सचिवालय की नींव डालने के लिए भारत के मानव संसाधन विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा महासागर विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी पधारे हुए थे। शिलान्यास समारोह के अवसर पर उन्होंने एक सारार्थित भाषण दिया जिसको चंद पंक्तियों को यहाँ उद्धृत करना अप्रासंगिक ना होगा।

“आज मेरी आंखों के सामने एक सपना मारोशस की सुंदर धरती पर साकार हो रहा है, जो 26 वर्ष पूर्व 1975 में आपकी-हमारी पितृ-भूमि में देखा गया था। अवसर पर नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का। इस दौरान हिंदी को अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाने के उत्साहपूर्ण वातावरण में स्वतंत्र मारोशस के प्रथम प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने मारोशस में स्थायी विश्व हिंदी सचिवालय बनाए जाने का प्रस्ताव रखा। वे चाहते थे कि हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाने का काम नियमित तथा सुसम्बद्ध तरीके से चलाया जाए।”

हिंदी की अस्मिता का प्रतीक-हिंदी सचिवालय बनाने का सपना विश्व भर के हिंदी प्रेमियों के मन में बना रहा। मारोशस, भारत, फिर मारोशस और उसके बाद त्रिनिडाड में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन में हर बार यह संकल्प दोहराया गया। भारत और मारोशस ने इस सपने को साकार करने के लिए आगे बढ़कर पहल की और लंदन में छठे विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन से पूर्व 20 अगस्त, 1999 के शुभ दिन, विश्व हिंदी सचिवालय को परस्पर सहयोग से मारोशस में स्थापित करने के समझौते पर स्वीकृति की भुहर लगा दी गई। 12 नवंबर, 2002 को मारोशस के मंत्रिमंडल द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम पारित किया गया

और भारत सरकार तथा मारोशस की सरकार के बीच 21 नवंबर, 2001 को एक द्विपक्षीय करार सम्पन्न किया गया। लंदन सम्मेलन ने इस सद्प्रयास का हार्दिक स्वागत किया और आज हम इस सुंदर भूमि पर उस सपने को साकार हांते देख रहे हैं। विश्व हिंदी सचिवालय ने 11 फरवरी 2008 से औपचारिक रूप से कार्य करना आरंभ कर दिया है।

मारोशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय का पहला भव्य विचार गोष्ठी समारोह गुरुवार 10 मई, 2007 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में देश के शिक्षा एवं संसाधन मंत्री माननीय धरमवीर गोकुल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर कला एवं संस्कृति मंत्री महेन्द्र गौरसु, देश की हिंदी संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा बहुत से अन्य हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। विचार-गोष्ठी का विषय था, 'हिंदी का उन्नयन: चुनौतियां एवं समस्याएं'।

कार्यक्रम एक वन्दना गीत से शुरू हुआ। प्रसिद्ध गायिका वर्षा रानी बिसेसर ने अपने मधुर स्वर में गीत प्रस्तुत किया:

‘जन-जन की अभिलाषा।

कि हिंदी बने विश्व भाषा ॥’

श्रीमती वीणु अरुण ने अपने स्वागत भाषण में विश्व हिंदी सचिवालय के उद्देश्यों को संक्षेप में बताया। शिक्षा मंत्री, जो सचिवालय के पैटन हैं, उन्होंने हिंदी की समुन्नति के लिए संगठित होकर कार्य करने को कहा। संगोष्ठी में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री जयप्रकाश कर्दम, कला और संस्कृति मंत्री माननीय महेन्द्र गौरसु, आर्य सभा के महासचिव श्री सत्यदेव प्रीतम, हिंदी संगठन के प्रधान श्री अजामिल माताबदल, साहित्यकार रामदेव भुम्भर, महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की डॉ. आर. गोविन ने भाग लिया और हिंदी को विश्व भाषा बनाने पर बल दिया। वक्ताओं का विचार था कि पहले हिंदी को राष्ट्रसंघ में प्रायोगिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए। इस दौरान हिंदी के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों और समस्याओं पर भी चर्चा की गई। विचार गोष्ठी अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल रही।

संगठन

विश्व हिंदी सचिवालय की एक शासी परिषद् (गवर्निंग कौंसिल) तथा एक कार्यकारी मंडल (एग्जिक्यूटिव बोर्ड) है। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव इसके मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं।

शासी परिषद्

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् में भारत तथा मारीशस, दोनों पक्षों, की ओर से 5-5 सदस्य हैं जो निम्नानुसार हैं :-

भारत की ओर से

विदेश मंत्री

मानव संसाधन विकास मंत्री

संस्कृति मंत्री

मारीशस के ओर से

विदेश कार्य, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्री

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री

कला एवं संस्कृति मंत्री

गैर-सरकारी सदस्य

डॉ. रत्नाकर पांडेय,

श्री अजामिल माताबदल

डॉ. बालकवि बैरागी,

श्री सत्यदेव टेंगर

शासी परिषद् की बैठक

शासी परिषद् की प्रथम बैठक, भारत के विदेश मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी की अध्यक्षता में 28 जनवरी 2008 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक में भारत की ओर से श्री प्रणव मुखर्जी, विदेश मंत्री, अर्जुन सिंह, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्रीमती अम्बिका सोनी, संस्कृति मंत्री, डॉ. रत्नाकर पांडेय, डॉ. आर पी मिश्र, नामित उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय तथा विदेश मंत्रालय,

मानव संसाधन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय के अधिकारीगण उपस्थित थे। मारीशस की ओर से श्री डी. गोखुल, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, श्री एम. एम. डल्लु, विदेश कार्य, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्री, श्री मुकेश्वर चुन्नी, मारीशस के उच्चायुक्त, डॉ. (श्रीमती) विनोद बालार अरूण, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, श्री अजामिल माताबदल, श्री सत्यदेव टेंगर तथा भारत में मारीशस के उच्चायोग से अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

कार्यकारी मंडल

सदस्य

भारत की ओर से

सचिव, विदेश मंत्रालय

सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय

सचिव, संस्कृति मंत्रालय

मारीशस में भारत का उच्चायुक्त

मारीशस के ओर से

स्थायी सचिव, विदेश कार्य, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्रालय

स्थायी सचिव, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय

स्थायी सचिव, कला एवं संस्कृति मंत्रालय

स्थायी सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय, मारीशस

कार्यकारी मंडल की बैठक

कार्यकारी मंडल की प्रथम बैठक श्री आर. पी. अग्रवाल, सचिव (उच्चतर शिक्षा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में 24-25 को मारीशस में आयोजित की गई। बैठक में भारत की ओर से श्री आर. पी. अग्रवाल, सचिव (उच्चतर शिक्षा), मानव संसाधन मंत्रालय, श्री वी. पी. हरन, संयुक्त सचिव विदेश मंत्रालय, श्री आर. सी. मिश्र, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, श्री वी. जयशंकर, मारीशस में भारत के उच्चायुक्त उपस्थित थे और मारीशस की ओर से श्री एस. रेगन, स्थायी सचिव, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, श्री एन. कं. बल्लाह, स्थायी सचिव, शेष पृष्ठ 48 पर

हमारा उद्देश्य भावनाओं को दबाना, कुचलना नहीं होना चाहिए बल्कि उस भावना और उद्देश्य की वजह का उचित विश्लेषण करना जरूरी है। जो संभवतः नकारात्मक न हो। अस्तु ने उचित ही लिखा है—गुस्सा करना एक सहज प्रतिक्रिया है लेकिन सही व्यक्ति पर सही समय पर सही मात्रा में और सही मकसद के लिए सही गुस्सा करना बहुत कठिन है। यही ई.आई.क्यू. का कुर्रिप्पा है। थोड़े उकसावे पर तेज गुस्सा या घर का गुस्सा दफ्तर में और दफ्तर का गुस्सा घर निकालने वाले दोनों जगह कितना तनाव ला देते हैं और अपना नुकसान कर बैठते हैं।

वैवाहिक जीवन में भी यही बात होती है। पति-पत्नी मले ही एक दूसरे से कितना ही प्यार करते हों, उनका ई.आई.क्यू. औसत से भी अच्छा हो, लेकिन भावनात्मक स्तर पर यदि वे अपस्थिब्व है तो उनका विवाहित जीवन तनावपूर्ण रहेगा। विवाह संस्था के प्रति आदर, जीवन सम्यी से सम्मन्वय और अपनी भावना का सही संप्रेषण ई.आई.क्यू. से ही आएगा।

हमारे प्राचीन, ऋषियों, संतों का इंद्रियों पर संयम और निष्ठा का उषदेश वही है जो अमरीका ने वर्षों के बाद खोजा।

पृष्ठ 27 का शेष

कला एवं संस्कृति मंत्रालय, श्री वी. चित्तु, प्रथम सचिव, विदेश कार्य मंत्रालय, श्रीमती एस. बहादुर, सहायक सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय तथा डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरूण, महामांचिव, विश्व हिंदी सचिवालय उपस्थित थे।

महासचिव

भारत सरकार तथा मरीशस की सरकार के बीच सम्पन्न द्विपक्षीय करार के अनुसार विश्व हिंदी सचिवालय का प्रथम महासचिव मारीशस से होगा और इसका कार्यकाल 3 वर्ष का होगा। तदनुसार मरीशस से डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरूण की विश्व हिंदी सचिवालय की प्रथम महासचिव के रूप में नियुक्ति की गई है।

उपमहासचिव

भारत सरकार तथा मरीशस की सरकार के बीच सम्पन्न द्विपक्षीय करार के अनुसार विश्व हिंदी सचिवालय का प्रथम उपमहासचिव भारत से होगा और इसका कार्यकाल 3 वर्ष का होगा। तदनुसार भारत से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र की विश्व हिंदी सचिवालय के प्रथम उपमहासचिव के रूप में नियुक्ति की गई है।

उद्देश्य

हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रोन्नत करना। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में सघन प्रयास करना।

हिंदी में अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठी, समूह विचार-विमर्श, चर्चा एवं कवि सम्मलेन जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

हिंदी के विद्वानों को सम्मानित/पुरस्कृत करना।

हिंदी में शोध कार्य के लिए प्रलेखन केंद्र स्थापित करना।

अन्तरराष्ट्रीय हिंदी पुस्तकालय की स्थापना करना।

अन्तरराष्ट्रीय हिंदी पुस्तक मंले का आयोजन करना।

इस प्रकार भारत के हिंदी भाषी प्रदेशों से सुदूर दक्षिण में एक छंटे से देश मरीशस में स्थापित विश्व हिंदी सचिवालय दुनिया जहान में हिंदी के लिए नई संभावनाओं का द्वार खोलने वाली पहली कड़ी है। 'हर महान परियोजना एक छोटे से विचार से जन्म लेती है' की अवधारणा को चरितार्थ करने वाला यह प्रयत्न आने वाले समय में हिंदी और शेष विश्व के मध्य प्रथम सेतु साबित होने जा रहा है। 1976 में मरीशस में सम्पन्न द्वितीय विश्व हिंदी सम्मलेन में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी के वर्तमान और भविष्य के बारे में प्रतीकात्मक ढंग से जो टिप्पणी की थी आज वो कदम दर कदम हिंदी की बढ़ती प्रगति को देखकर अक्षरशः सत्य लगती है। उन्होंने कहा था- "रवि मंडल देखत लघु लागा. उदय तासु त्रिभुवन तम भगा," सूर्य का मंडल कितना छोटा सा, एक थाली जैसा उगता है लेकिन जिस दिन सूर्य का मंडल उदित हो जाता है उसी क्षण संसार का अंधकार दूर हो जाता है। हमारे सामने मरीशस देखने में छोटा लेकिन अपार तेजस्वी रूप है। यह देखें हमारे सामने यह जो संसार को निश्चित रूप से नया संदेश दे रहा है और यही नया संदेश आगे चलकर कदाचित विश्व संस्कृति का एक आर्दश रूप बनेगा।